''असगर वजाहत के उपन्यासों मे अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या : एक अध्ययन''

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानवविद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध –प्रबंध का प्रारूप

शोधार्थी

इम्रान वजीर शेख

एम.ए.बी.एड्. सेट (हिंदी)

शोध – निर्देशक

डॉ. सतीश यादव

(हिंदी विभागाध्यक्ष)

शिवाजी महाविद्यालय, रेणापुर

ता. रेणापुर, जि. लातूर

जून 2017

'' असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्याः एक अध्ययन''

- **प्रस्तावना :–**

उपन्यास हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। आज गद्य विधाओं मे उपन्यास एक प्रमुख विधा के रूप में मानी जाती हैं। उपन्यास साहित्य में मनुष्य के जीवन का यथार्थ चित्रण होता हैं। उपन्यासकार उपन्यास में विविध परिस्थितियों का चित्रण करता हैं। उपन्यास समाज का दर्पण होता हैं। उपन्यास के द्वारा उपन्यासकार समाज को सामने रखने का प्रयास करता हैं। उपन्यासों में बदलते समाज का चित्रण होता हैं।

आज उपन्यास एक प्रभावशील विधा होने के कारण उसका समाज पर गहरा प्रभाव पड रहा हैं। विभिन्न हिंदी उपन्यासकारों में विभिन्न समसामायिक परिस्थितियों के साथ विविध समस्याओं का चित्रण किया है।

असगर वजाहत एक सशक्त उपन्यासकार हैं। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, लघुकथा, संस्मरण आदि विविध विधाओं में सार्थक एव प्रभावशाली सृजन किया हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में सांप्रदायिकता, नारी समस्या, धर्माधता का चित्रण किया हैं। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में सात आसमान, गरजत बरसत, कैसी आगी लगाई, बरखा रचाई, रात में जागने वाले, पहर दोपहर, मनमाटी आदि उपन्यासों का सृजन किया हैं।

- **<u>शोध विषय की प्रेरणा एवं विषय चयन :–</u>**

मुझे अध्ययन करने में बडी रूचि हैं। बी.ए. और एम.ए. की उपाधि के अध्ययन काल में मै उपन्यास विधा की और आकर्षित हुआ। इस विधा से संबंधित अधिक जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा निर्माण हुई। मैंने विविध उपन्यासों को पढना शुरू किया जिसमें गोदान, झुठा–सच, तमस, मुझे चॉद चाहिए, कितने पाकिस्तान आदि हैं। इन उपन्यासों में विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला हुआ था। पढाई के दौरान मुझे असगर वजाहत के उपन्यास पढने का अवसर मिला इसमें असगर वजाहत ने सांप्रदायिकता, धर्मांधता आदि का वर्णन किया हैं। असगर वजाहत का जीवन परिचय देखने के बाद मैं उनके व्यक्तित्व एक कृतित्व से अधिक प्रभावित हो गया उनके साहित्य के प्रति मेरी उत्सुकता अधिक बढ गई इसि कारण उनके उपन्यासों पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा मेरे मन में निर्माण हो गई। इसि जिज्ञासा के कारण मैने गुरूवर्य डॉ सतीश यादव जी से उपर्युक्त विषय के बारे में विचार–विमर्श किया। उन्होंने मेरी सराहना करते हुए तथा कुछ आवश्यक बदलावों एवं सुचनाओं के साथ इस विषय पर अनुसंधान करने की अनुमति दी। अतः मैने ''असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्याः एक अध्ययन'' इस विषय का शोध अध्ययन के लिए चयन किया।

किसी विशेष प्रकार की संस्कृति और धर्म को दुसरोंपर आरोपित करने की भावना या धर्म अथवा संस्कृति के आधारपर पक्षपातपूर्ण व्यवहार करने की क्रिया सांप्रदायिकता हैं। सांप्रदायिकता समाज में वैमनस्य उत्पन्न करती हैं और एकता को नष्ट करती हैं। सांप्रदायिकता के कारण समाजको दंगे और विभाजन जैसे कुपरिणामों को भुगतना पडता हैं। साम्राज्यवादी ताकतें गरीब देशों पर या एक देश दुसरे देश पर अधिकार करने या उसको कमजोर की नीयत से सांप्रदायिकता फैलाते हैं। सांप्रदायिकता सामाजिक सद्भावना के लिए घातक होती हैं।

• शोध विषय का महत्व :–

असगर वजाहत हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज को समानता का संदेश दिया हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक सद्भाव, एकता, शांति प्रस्थापित करने का प्रयास किया हैं।

असगर वजाहत का भाषा लालित्य वैविध्यपूर्ण रहा हैं। जिसके कारण उनके उपन्यास पढते समय पाठक गहराई को महसूस करता हैं। यही कारण हैं की असगर वजाहत के उपन्यासों पर अनुसंधान करने की जिज्ञासा मेरे मन में निर्माण हुई।

• शोध विषय का उद्देश्य :–

1) असगर वजाहत के जीवन एवं अभिव्यक्ति का अध्ययन करना।
2) असगर वजाहत के उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिकता की समस्या का अध्ययन करना।
3) असगर वजाहत के उपन्यासों में चित्रित समाज का अध्ययन करना।
4) असगर वजाहत के उपन्यासों का कथ्थगत अध्ययन करना।
5) असगर वजाहत के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन करना।
6) भारतीय समाज जीवन में व्याप्त सांप्रदायिकता की समस्या को समझना। असगर वजाहत की रचनाओं के माध्यम से इन समस्या के मूल तक पहॅुचना।

- **शोध प्रबंध की सीमा एवं व्यप्ति :–**

किसी भी विषय का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन करने के लिए अथवा शोध विषय को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए उसका सुनियोजित होना अनिवार्य होता हैं। इसे केंद्र में रखते हुए मैंने अपना शोध विषय ‘‘असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या : एक अध्ययन यहाॅ तक सीमित रखा हैं।

- **असगर वजाहत के उपन्यासों पर संपन्न शोध कार्य :–**

पीएच.डी.

1) ‘‘असगर वजाहत की रचनाओं में सामाजिक चेतनाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन‘‘

शोधकर्ता :– निम्मी. ए.ए.

कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,

कोच्चिन –22

तारीख : अगस्त 2009

मेरी सीमित जानकारी के अनुसार असगर वजाहत के उपन्यासों पर किसी भी प्रकार का शोध कार्य नही हुआ हैं। हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र में मेरा ‘‘असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या – एक अध्ययन‘‘ इस अभाव की पुर्ति का छोटा – सा प्रयास होगा।

- **अनुसंधान पध्दति :–**

‘‘असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या – एक अध्ययन‘‘ प्रस्तुत विषय के अनुसंधान पुर्ति हेतू प्रमुखता से वर्णणात्मक, विश्लेषणात्मक, अनुसंधान पध्दति का प्रयोग किया जा सकता हैं। आवश्यकतानुरूप सैध्दांतिक व्याख्यात्मक, तथा साक्षात्कार आदि समीक्षा पध्दतियों का प्रयोग किया जाएगा। इस शोध कार्य के लिए विशय से संबधित मूलग्रंथ या आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, कोश, पत्र – पत्रिकाऍं आदि का उपयोग किया जाएगा।

- **<u>शोध प्रबंध की रूपरेखा :–</u>**

''असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या : एक अध्ययन'' इस शोध विषय पर अनुसंधान करने के लिए शोध – प्रबंध की रूपरेखा निश्चित तथा सुनियोजित करना आवश्यक होता हैं। इससे अनुसंधान को उचित दिशा मिलती है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि सें मैने शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है।

- **<u>शोध विषय :–</u>**

<u>'' असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या : एक अध्ययन''</u>

☼ अध्याय निर्धारण ☼

प्रथम अध्याय	:	सांप्रदायिकता : स्वरूप, अवधारणा,
द्वितीय अध्याय	:	असगर वजाहत : जीवन और अभिव्यक्ति
तृतीय अध्याय	:	असगर वजाहत के उपन्यासों का कथ्यगत मूल्यांकन
चतुर्थ अध्याय	:	असगर वजाहत के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या : एक अध्ययन
पंचम अध्याय	:	असगर वजाहत के उपन्यासों का शिल्पगत विवेचन
षष्ठ अध्याय	:	निष्कर्ष और मूल्यांकन
परिशिष्ट		
ग्रंथ सुची		

प्रथम अध्याय

- **प्रस्तावना :**

1.1 सांप्रदायिकता

1.1.1 स्वरूप

1.1.2 अवधारणा

द्वितीय अध्याय

असगर वजाहतः जीवन और अभिव्यक्ति

2.1 जीवन (व्यक्तित्व)

2.1.1 जन्म
2.1.2 माता
2.1.3 पिता
2.1.4 बचपन
2.1.5 पारिवारिक जीवन
2.1.6 शिक्षा
2.1.7 वैवाहिक जीवन
2.1.8 साहित्य सृजन की प्रेरणा
2.1.9 पुरस्कार एवं सम्मान

2.2 अभिव्यक्ति (कृतित्व)

2.2.1 उपन्यास

1) सात आसमान (1996)
2) कैसी आगी लगाई (2004)
3) बरखा रचाई (2009)
4) पहर दोपहर (2011)
5) मन माटी (2007)
6) रात में जागने वाले
7) गरजत बरसत

2.2.2 <u>कहानी संग्रह</u>

1) दिल्ली पहूँचना हैं।	(1981)

2) स्विमिंग पूल	(1990)

3) सब कहॉ कुछ	(1996)

4) मैं हिंदु हूँ	(2006)

2.2.3 <u>नाटक</u>

1) इन्ना की आवाज	(1986)

2) वीरगति	(1988)

3) सबसे सस्ता गोश्त	(1990)

4) गोडसे @ गांधी.कॉम	(2012)

5) जिन लाहौर नई वेख्या वो जन्म्या ई नई

2.2.4 <u>लघु कथाएँ</u>

1) आग

2) गुरू – चेला संवाद

3) बंदर

4) योध्दा

5) राजा

2.2.5 <u>यात्रा संस्मरण</u>

1) चलते तो अच्छा था	(2009)

2) इस पतझड में आना

2.2.6 **<u>आत्मकथा</u>**

1) कहानी लिखने का कारण

2.2.7 <u>आलोचना</u>

1) हिंदी – उर्दू की प्रगतिशील कविता	(1985)

तृतीय अध्याय

असगर वजाहत के उपन्यासों का कथ्यगत मूल्यांकन

- **प्रस्तावना :–**

3.1. सात आसमान

3.1.1 कथ्य / सुत्र

3.1.2 कथानक

3.1.3 पात्र और चरित्र – चित्रण

3.1.4 देश काल वातावरण

3.1.5 उद्देश्य

3.2 गरजत बरसत

3.2.1 कथ्य / सूत्र

3.2.2 कथानक

3.2.2 पात्र और चरित्र – चित्रण

3.2.4 देष काल वातावरण

3.2.5 उद्देश्य

3.3 कैसी आगी लगाई

3.3.1 कथ्य / सुत्र

3.3.2 कथानक

3.3.3 पात्र और चरित्र –चित्रण

3.3.4 देश काल वातावरण

3.3.5 उद्देश्य

3.4 बरखा रचाई

3.4.1 कथ्य / सुत्र

3.4.2 कथानक

3.4.3 पात्र और चरित्र –चित्रण

3.4.4 देश काल वातावरण

3.4.5 उद्देश्य

3.5 रात में जागने वाले

3.5.1 कथ्य / सुत्र

3.5.2 कथानक

3.5.3 पात्र और चरित्र –चित्रण

3.5.4 देश काल वातावरण

3.5.5 उद्देश्य

3.6 पहर दोपहर

3.6.1. कथ्य / सुत्र

3.6.2 कथानक

3.6.3 पात्र और चरित्र चित्रण

3.6.4 देश काल वातावरण

3.6.5 उद्देश्य

3.7 मनमाटी

3.7.1 कथ्य / सुत्र

3.7.2 कथानक

3.7.3 पात्र और चरित्र चित्रण

3.7.4 देश काल वातावरण

3.7.5 उद्देश्य

चतुर्थ अध्याय

''असगर वजाहत के उपन्यासों मे अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या : एक अध्ययन''

- **प्रस्तावना :–**

4.1 सांप्रदायिकता की समस्याः प्रत्येक उपन्यास में अभिव्यक्त समस्या के स्वरूप पर प्रकाश डाला जाएगा।

पंचम अध्याय

असगर वजाहत के उपन्यासों का शिल्पगत विवेचन

5.1 भाषा रूप :

5.1.1 कथ्यानुरूप भाषा प्रयोग

5.1.2 विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग

5.1.3 कल्पना विधान

5.1.4 बिम्ब विधान

5.1.5 प्रतीक विधान

5.2 शैली भेद

5.2.1 वर्णनात्मक शैली

5.2.2 विश्लेषणात्मक शैली

5.2.3 आत्मकथात्मक शैली

5.2.4 संवाद शैली

षष्ठम अध्याय

निष्कर्ष और मूल्यांकन

- **प्रस्तावना :–**

इस अंतिम अध्याय में शोध प्रबंध के सभी अध्यायों को निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। शोध विषय के आधारपर मूल्यांकन कर सार को प्रस्तुत किया जाएगा। हिंदी उपन्यासों की परंपरा में असगर वजाहत के स्थान और योगदान को रेखांकित किया जाएगा

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

पत्र पत्रिकाएँ

शब्दकोश

शोध अध्ययन की यह स्थूल रूपरेखा हैं। विस्तार के साथ अध्ययन करते समय इसमें परिवर्तन की संभावना हैं।

शोधकर्ता

इम्रान वजीर शेख

शोध निर्देशक
डॉ. सतीश यादव
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
शिवाजी महाविद्यालय, रेणापुर
ता. रेणापुर जि. लातुर